काका शिकोहाबादी के दोहे गीत और कवितायें

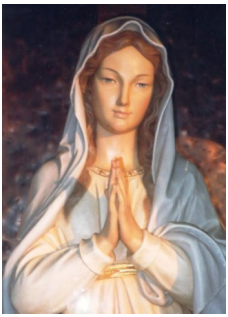

मरियम की तस्वीर

अब तो पानी में भी सुलगती है अरमानों की आग,
ऐसी दुनियां से दूर कहीं तू भाग सके तो भाग।

दूर से ही दिख जाता था कहीं टूटा
मकान था अपना,
आज करीब आने पर भी कोई नहीं
लगता है अपना।

तक्षक भी डर कर अब तो भागने लगे हैं,
ज़हरीले उनसे ज्यादा आदमी जो होने लगे हैं।

बकरी ने कहा बकरे से चल इस दुनियां से
दूर कहीं हम प्रेम करेंगे,

बकरा बोला, तूने देर की, कल बकरीद है,
आज रमज़ान खत्म होंगे।

जहां तक चलतेचलते थके रास्ता आगे भी नहीं,
सोच ले पथिक तू भी, मंजिल अब कहीं भी नहीं।

पैसा ही एक दम से बनाना है तो
एक काम करो,
क्यों न फिल्मों और किताबों से यीशु
को बदनाम करो।

अब तो आदमी का मकसद है, स्वार्थ को
ही क्यों न धर्म बनाया जाये,
चाहे इसके लिये क्यों न धर्म का ही
खून बहाया जाये।

जितना बड़ा तेरा झूठ उतने ही छल तेरे सब करीब,
जितना लंबा सच है, उसकी उतनी ही लंबी सलीब।

दूर से ही देखिये इन झोपड़ियों का
कैसा काला इतिहास,
जिनके भीतर लिखा है, रोग
पीड़ा और प्यास।

सूरज निकला नहीं, बारिश में हाथ धरे
बैठा रहा रोज़ाना का मजदूर,
काम कुछ मिला नहीं पानी पी कर सो गये
घर के सब मजबूर।

जलन, द्वेष, स्वार्थ छोड़कर दूर रखें कटु
वचनों की शमशीर,
प्रेम-प्यार कैसे पले, कुछ तो ढीलीं करें
इन रिश्तों की जंजीर।

दुनियां की इस चाल में आंखें फूटी,
टांगे टूटी कभी न मिली छांव,
धैर्य बांध के फिर भी चलते जाओ भाई,
कभी तो मिलेगा गांव।

क्रिसमस की रात में खूब पीतेखाते,
और झूमे थे नंगे शरीर,
दुखियारी सी देखती रही चुप,
मरियम की तस्वीर।

जब भी

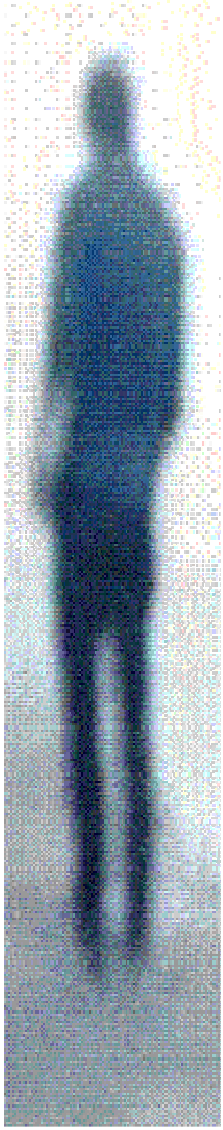

जब भी अपने शहर में जाता हूं,
वही पुरानी टूटी सड़कें पूछती हैं,
क्या लेने आये हो?
हम अभी तक नहीं बदली हैं,
तुम बदल गये, संवर गये हो, क्या यही
बताने आये हो?

पुराने घर की चारदीवारी थी कभी,
आज उसकी एक ईंट भी नहीं,
दरवाज़े पर बैठा हुआ राजू भाग कर आते
ही पूछता है,
भैया विदेश से मेरे लिये क्या
लाये हो?

वादियों में

शाम के पहले ही सितारे से ज़ख्मों
को कोई कुरेदने लगता है,
जैसे सूर्य ढलते ही वादियों में कुदरत
का धुंआ उठने लगता है।

चूल्हा जलता है जिस घर में
दो रोटियों के लिये,
मेरा अतीत उसी आग में चुपचाप
जलने लगता है।

जब भी करते हैं याद तुझे मेरे बिगड़े
हुये मांझी के साथ,
मेरी बदनामियों का इतिहास
उबलने लगता है।

लोग तो जलाते हैं दिये को अपने
घर में रोशनी के लिये,
उसे देखते ही मेरे दिल का चिराग
जाने क्यों सुलगने लगता है।

रिवाज़-ए-दुनियां में मरने के बाद
इंसान को जलाया करते हैं,
मेरा जिस्म तो सदा से जिंदा ही
जला करता है।

महफिलें शबाब बन कर उफनती हैं
जब रात की गहराइंयों में,
गानेवाला मेरी ख़ताओं को हिसाब
लगाकर सुनाया करता है।

सर्कस में हंसाते हैं जोकर तमाशबीनों
की तरह देखने वालों को,
किस्मत से अपनी सूरत का मज़मा
तो रोज़ ही लगा करता है।

मक्खी

मक्खी बैठी मुंह पर,
मानव ने दुतकार के लताड़ा,
और मारा उसके हाथ,
बोला , शर्म नहीं आई तुझको?
गंदी नाली की अभागन,
ज़रा पहचान तो अपनी औकात?
उड़ कर भागी मक्खी और
दूर ही से बोली मानव से,
कोई बात नहीं है बच्चू,
और कुछ दिन कर ले अपनी ही बात,
जब मर जायेगा एक दिन,
तब बैठूंगी तेरे मुंह पर मैं,
बड़े ही आराम के साथ।

मरियम

(यीशु की सलीब के समय)
उस अश्रमुखी मरियम की आंखों
में रोता था उसका हर सपना,
गोरे गालों पर गिरता था हर आंसू
यूं गल रही थी ममता। 🕊

गज़ल

वह हंसते रहे मीलों तक, कोई गिला नहीं,
हम मुस्कराये एक पल, तो मुंह बना लिया।

रहता मेरे पास तो ये फूटता जरूर,
भला हुआ जो तुमने मुकद्दर चुरा लिया।

कहा था भ्रष्टाचार के तोड़ देंगे पैर,
पता चला कि विधवा का घर ही ढा दिया।

राजनीति का खेल है, लूटो, मारो, खाओ,
साम, दाम और दंड से समर्थन बना लिया।

जीते-जी जली, मरकर जली, ये ज़िन्दगी जली,
जाने वाले ने अपना फलसफा बता दिया।

अपनों में भी होता है प्यार, पता नहीं,
तुमको मिला होगा, सो तुमने बता दिया।

झूठ का विरोध किया, सच्चाई थी, सफाई थी,
इन्हीं को असफलता का कारण बता दिया।

सफल कैसे होते, दीवारें वे तोड़ न सके,
दोष में हमें रास्ते का पत्थर बता दिया।

हम क्यों जायें अब समझाने किसी को,
सवाल जितने थे, उन सबको ही मिटा दिया।

खुद धुंओं से खेलते रहे, नीर आंखों में भर गया,
कहने लगे कि, देखो तुम्हीं ने रूला दिया।

जूतियां फटीं नहीं, पैर भी जले ज़िन्दगी भर,
यूं ज़िन्दगी ने, ज़िन्दगी को रूसवा बना दिया।

बात

ज़िन्दगियों का इतिहास
सदा कहता आया है यह बात,
खत्म न होती मुश्किलें,
मारो हा-पैर तुम दिन रात।

एक बार को जानवर भी,
सुन लेंगे तुम्हारी बात,
मगर नहीं सुनेगा आदमी,
चिल्लाओं तुम आधी रात।

वह तो अपनी धुन में,
गायेंगे ही, हर जाड़ा, गर्मी और बरसात,
जो शुरू हुए एक बार को,
फिर खत्म न होती उनकी बात।

दोहे

'काका' बोलें तो पूछेंगे,
समझ में नहीं आई कथावस्तु,
और आका बोलें तो,
तुरन्त कहेंगे कि 'तथास्तु'।

भूखे पेट पत्तल चाटें
ऐसा मेरा भारत महान,
परमिट वाले कभी न खोलें,
अब राशन की दुकान।

रिश्ते-नाते

रिश्ते नाते, झूठे रिश्ते, सच्चे किसके होते हैं,
अपने ही ये झूठे नाते अपने किसके होते हैं,
इनसे बेहतर होते हैं, ज्यादा कागज़ के फूल,
जिनमें खूश्बू नहीं, तो कांटे भी नहीं होते हैं।

दोहे

आतंकी का विश्वास नहीं कभी भी करे तंग
जैसे दूध पिलाये सांप को और मारे डंक।

मजदूर बोले सागर से मेरी मानेगा जानी,
मेरे पसीने से ख़ारा कभी नहीं तेरा पानी।

चर्च-नीति का दांव है ऐसे खेलो खेल,
हाथ मिलाओ रोज़ ही पर कभी न करो मेल।

राजनीति की पहचान है, गुंडा-गर्दी के दांव,
मतलब पड़े तो हाथ जुड़ें, फिर तोड़ेंगे पांव।

एक यहूदा के छल से दुनियां का था उद्धार,
आज लाखों यहूदा हैं पर नैया लगे न पार।

वह जमाने और थे जब चेले खाते थे मार,
ये जमाना और है आज तो रूहें खायें मार।

कलीसिया की सुनें नहीं बस अपनी ही सुनायें बात,
मनवा सको तो मनवा लो, चिल्लाओं तुम दिन रात।

लकड़ी कहे आदमी से आज तू जलाता है मुझको,
एक दिन ऐसा आयेगा जब मैं जलाऊंगी तुझको।

सही साधना वही है जिसमें होये न खर्च,
ईश बसाये चलते जाओ मिल जायेगा